एफएमडीए का एक और सड़क घोटाला

तिकोना पार्क-चिमनीबाई धर्मशाला सड़क निर्माण नये सिरे से

फ़रीदाबाद (म.मो.) तिकोना पार्क से लेकर ईएसआई मेडिकल कॉलेज होते हुए चिमनीबाई धर्मशाला तक करीब साढे तीन किलो मीटर लम्बी चार लेन की सड़क के पुनर्निर्माण का बीड़ा अब एफएमडीए ने उठाया है। इस सड़क का निर्माण पहले भी कई बार हो चुका है। आखिरी बार इसका निर्माण सन 2010 में नगर निगम ने गांधी नामक ठेकेदार से कराया था। आधा-अधूरा काम करने के बावजूद, अधिकारियों की मिलीभगत एवं हिस्सा-पत्ती के चलते गांधी नौ करोड़ रुपये वसूल कर गया था। ठेके की शर्त के मुताबिक उसे पांच साल तक सड़क का रख-रखाव भी करना था, जो उसने कतई नहीं किया। इसके फलस्वरूप दो साल में ही सड़क जर्जर हो गई।

29 करोड़ के बजट से इस सड़क को फिर से बनाने का ठेका देने की बात चल रही है। मामले को गोल-मोल कर लपेटने के लिये इसी 29 करोड़ के बजट में सेक्टर 15-16 की करीब तीन किलो मीटर की विभाजक सड़क जो राजमार्ग को बाइपास से जोड़ती है का निर्माण भी शामिल किया गया है। सवाल पैदा होता है कि दोनों सड़कों के बजट अलग-अलग क्यों नहीं बताये जाते? वैसे यह सड़क भी पहले 'हूडा' और फिर नगर निगम द्वारा कई बार बनाई

सुधीर राजपाल, सीईओ, एफएमडीए

जा चुकी है। सड़क निर्माण के धंधे को उपजाऊ बनाये रखने के लिये पहले इस बनी-बनाई सड़क को खोद कर इसमें सीवर लाइन डाली गई और फ़िर इसका निर्माण किया गया। इस कवायद में यह सड़क करीब एक साल तक बंद रही, वैसे छुट-मुट काम अभी भी चल रहे हैं।

रही बात तिकोना पार्क-चिमनीबाई सड़क की तो इसे पूरी तरह से खोद कर बनाने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसमें केवल पैचवर्क एवं कार्पेटिंग की आवश्यकता है।

इस काम के लिये अधिक से अधिक खर्चा 10-15 लाख का हो सकता है, अफसरों व नेताओं की कमीशनखोरी के नाम का पांच लाख अतिरिक्त भी जोड़ दिया जाय तो भी यह खर्च 20 लाख से अधिक नहीं बन सकता। परन्तु लुटेरे अफसरों व नेताओं का पेट पांच लाख से नहीं भर सकता। इसलिये इसका बजट करोड़ों में रखा गया है।

तय कार्यक्रम के अनुसार इस सड़क का निर्माण 31 दिसम्बर तक पूरा हो जाना चाहिये, लेकिन खबर लिखे जाने तक मात्र इसका 200 मीटर का एक टुकड़ा ही बन पाया है। काम को लम्बा खिंचना भी जरूरी है ताकि बजट को और बढवाया जा सके जैसा कि नाहर सिंह क्रिकेट स्टेडियम के निर्माण में हो रहा है। वहां इसी नीति के चलते 127 करोड़ का बजट बढ़कर 222 करोड़ हो चुका है।

Paytm

MM

Majdoor Morcha

UPI ID: 8851091460@paytm

8851091460

Scan this QR or send money to 8851091460 from any app. Money will reach in Majdoor Morcha's bank account.

केवल पाठकों के दम पर चलने वाले इस अखबार को सहयोग देकर अपनी आवाज को बुलंद रखें।

मज़दूर मोर्चा- खाता संख्या- 451102010004150

IFSC Code : UBIN0545112

Union Bank of India, Sector-7, Faridabad

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड।
2. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
3. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे।
4. जितेन्द्र, बाटा सेंटर - 9971064207
5. मोती पाहुजा - मिनार गेट पलवल, 9255029919
6. सुरेन्द्र बघेल - बस अड्डा होडल - 9991742421

जनवादी लेखक संघ का वक्तव्य

राम राज्य में ईश्वर वन्दना में जुर्म

उत्तर प्रदेश के बरेली में बच्चों से अल्लामा इक़बाल की प्रार्थना 'लब पे आती है दुआ' का गायन कराने के 'जुर्म' में एक शिक्षामित्र वज़ीरउद्दीन और स्कूल की प्रधानाध्यापिका नाहिद सिद्दीक़ी के खिलाफ़ एफ़आईआर दर्ज हुई और 26 दिसम्बर को शिक्षामित्र को मुअत्तल करने के साथ प्रधानाध्यापिका को निलंबित कर दिया गया। उनके खिलाफ़ विश्व हिंदू परिषद के स्थानीय नेता ने शिकायत की थी जिसमें एक ओर तो सरकारी स्कूल में मज़हबी प्रार्थना गवाकर बच्चों को इस्लाम की ओर आकर्षित करने का आरोप लगाया गया था, दूसरी ओर उनकी धार्मिक भावनाओं को आहत करने का भी आरोप लगाया गया था। यहां सवाल पैदा होता है कि जब 23 दिसम्बर को आगरा शहर में भगवा हुड़दंगी बीच चौराहे के शान्ता क्लॉज को फूंक रहे थे तब क्या किसी भी भावनायें आहत नहीं हो रही थीं? तुम्हारी भावनायें तो भावनायें, दूसरों की भावनाओं को भावना ही नही समझते।

इक़बाल की यह प्रार्थना सांप्रदायिक तत्त्वों की दुरभिसंधि के कारण पहले भी विवाद में आ चुकी है। यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि जिस प्रार्थना में 'ग़रीबों की हिमायत करने', 'दर्दमंदों और ज़ईफ़ों से मोहब्बत करने' की बात है, जिसमें अल्लाह से 'नेक राह पर चलाने और बुराई से बचाने' की दुआ की गई है, उसे 'अल्लाह' शब्द के हवाले से धर्मांतरण के आह्वान के तौर पर पेश किया जा रहा है, और यह काम न सिर्फ़ विश्व हिंदू परिषद जैसा सांप्रदायिक संगठन कर रहा है बल्कि प्रदेश के प्रशासकों की उसके साथ पूरी सहमति भी है। कोई आश्चर्य नहीं अगर उन्होंने अल्लाह को संबोधित होने के कारण ही नहीं बल्कि उर्दू लफ़्ज़ों की बहुलता के कारण भी इस प्रार्थना को धर्म-प्रचार मान लिया हो! उनसे पूछा जाना चाहिए कि क्या वे सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की 'वर दे, वीणावादिनी वर दे' को भी, देवी सरस्वती को संबोधित होने और संस्कृतनिष्ठ होने के आधार पर आपत्तिजनक मानने के लिए तैयार होंगे?

अल्लामा इक़बाल की जिस प्रार्थना को लेकर विवाद उठाया है, उसे पूरा पढ़कर लोगों को यह देखना चाहिए कि क्या यह किसी भी कोण से एतराज़ किए जाने लायक़ है?

जनवादी लेखक संघ इक़बाल की इस कविता को विवादास्पद बनाने और इसके पाठ के आधार पर शिक्षकों पर कार्रवाई किए जाने की निंदा करता है तथा शिक्षामित्र वज़ीरउद्दीन को दुबारा बहाल किए जाने और प्रधानाध्यापिका नाहिद सिद्दीक़ी का निलंबन वापस लिए जाने की माँग करता है।

संयोग है, और नहीं भी है, कि जिस दिन यह कार्रवाई हुई, उसी दिन मथुरा की एक ज़िला अदालत ने 1991 के प्लेसेज़ ऑफ़ वर्शिप (स्पेशल प्रोविजन) एक्ट की अनदेखी करते हुए श्री कृष्ण जन्मभूमि-शाही ईदगाह मस्ज़िद विवाद में शाही ईदगाह परिसर के आधिकारिक निरीक्षण की इजाज़त दी। 1991 का क़ानून स्पष्ट निर्देश देता है कि अयोध्या के एक मामले को छोड़कर अन्य सभी उपासना स्थल उसी स्थिति में रहेंगे जिस स्थिति में वे 15 अगस्त 1947 को थे।

ऐसे में पहले काशी और अब मथुरा के मामले में अदालतों का ऐसा रवैया दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जाएगा जो बहुसंख्यक समुदाय की राजनीति करनेवालों के दबाव में संवैधानिक प्रावधानों के उल्लंघन जैसा प्रतीत होता है।

विविधताओं से भरे इस देश की साझा सांस्कृतिक विरासत को नष्ट करने की ऐसी कोशिशों का हर स्तर पर विरोध होना चाहिए।

संजीव कुमार (महासचिव)

बजरंग बिहारी तिवारी (संयुक्त महासचिव)

नलिन रंजन सिंह (संयुक्त महासचिव)

संदीप मील (संयुक्त महासचिव)

संबंधित नज्म पेज सात पर देखे

शहीदे-ए-आजम के नाम को बेचने में जुटा यादवेन्द्र

फ़रीदाबाद (म.मो.) भाजपाई खट्टर सरकार के टूकड़ों पर पलने वाले, एनएच पांच निवासी यादवेन्द्र सिंह अपने आप को शहीदे आजम भगत सिंह का पौत्र बता कर 'मेरा परिवार शहीद भगत सिंह परिवार' के नाम से एक नया नाटक शुरू कर चुका हैं। इससे पूर्व उन्होंने भगत सिंह की मूर्ति संसद भवन में लगवाने तथा उन्हें पूर्ण सम्मान दिलाने के लिये आन्दोलन चलाने की घोषणा की थी। लेकिन जब खट्टर ने उनके मुंह में चेयरमैन रूपी लॉलीपॉप घुसा दिया तो उनकी बोलती बंद हो गई, सारा आन्दोलन धरा रह गया और खट्टर स्तुति में जुट गया।

अब वे, और अधिक कमाई करने के लिये भगत सिंह की तस्वीर को बेचने का धंधा करने जा रहे हैं। मुहूर्त के तौर पर पहली फोटो वे डीसीपी एनआईटी नरेन्द्र कादयान को बेच भी आये हैं। इससे पहले इनके पिता बाबर सिंह भी इसी तरह के पाखंड करके अपने समय की सरकारों से अच्छी-खासी वसूली करते रहते थे। जब सिमेंट ब्लैक में बिका करती थी तो उन्होंने इसकी एजेंसी लेकर अच्छा कारोबार किया था। भगत सिंह के नाम पर एक शिक्षा संस्थान चलाने के लिये सरकार से एनएच तीन में एक भूखंड भी हथिया लिया था। इन बाप-बेटों को भगत सिंह के क्रांतिकारी विचारों से कभी कोई लेना-देना नही रहा। कांग्रेस राज आया तो कांग्रेसी हो गये चौटालों का आया तो उनके भक्त हो गये अब खट्टर सरकार की जूतियां उठाने में भी इस नौजवान को कतई कोई परहेज नही।

एनआईटी थाने के सामने वाले गोल चक्कर में वर्षों पहले स्थापित भगत सिंह की मूर्ति को उखाड़ कर जब खट्टर सरकार ने फिकवा दिया तो उसका विरोध करने की इनकी हिम्मत न हुई। विदित है कि उनकी मूर्ति के स्थान पर खट्टर ने 'विभाजन विभिषिका' की पट्टी लगा कर तीन बुत खड़े कर दिये। बहकाने के लिये उन्हें भगत सिंह, चन्द्रशेखर व राजगुरू बता दिया, जबकि वहां इनमें से किसी का भी नाम नहीं लिखा गया और न ही बुतों की शक्ल उक्त तीनों शहीदों से मिलती है। इसके अलावा भगत सिंह का विभाजन की विभिषिका से कोई लेना-देना नहीं क्योंकि वे विभाजन से 16 वर्ष पूर्व ही शहीद हो चुके थे।

पूंजीवाद की सेवा में जुटी भाजपाई सरकार भगत सिंह के क्रांतिकारी एवं साम्यवादी विचारों से भयभीत है। वह किसी भी कीमत पर उनके विचारों को जनता में फैलने नहीं देना चाहती। यह सरकार कभी नहीं चाहेगी कि भगत सिंह आम जनता के बीच हीरो बनकर छायें। ज्यों-ज्यों वे जनता के बीच आयेंगे त्यों-त्यों उनके विचार भी जनता तक पहुंचने लगेंगे। बस यही तो सरकार नहीं चाहती। सरकार तो केवल 'वीर' सावरकर, दीनदयाल उपाध्याय तथा श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे साम्प्रदायिकता फैलाने वालों को ही जनता के बीच स्थापित करना चाहती है।